3

अमेरिका महाद्वीप में यूरोपीय लोगों का आना और बसना

अमेरिका के आदिवासी कबीले

आज से 500 वर्ष पहले की बात है। उस समय उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में बहुत सारे कबीले रह रहे थे। इस महाद्वीप के अलग-अलग भागों में अलग-अलग कबीले रहते थे जिनका जीवन भी भिन्न-भिन्न था।

अमेरिका महाद्वीप के बिलकुल उत्तर

इस बेहद ठंडे इलाके में एस्किमो कबीले रहते थे। यह प्रदेश एशिया के टुंड्रा प्रदेश जैसा ही है। अतः वहां रहने वाले एस्किमो लोगो का जीवन भी टुंड्रा प्रदेश के लोगो जैसा ही था - वे सील और ध्रुवीय भालू का शिकार करके जीते थे।

ग्रेट लेक्स के आसपास और मिसिसिपी नदी का मैदान

यह घने जंगलो का प्रदेश था। यहां पर रहने वाले कबीले जंगलों में शिकार करते थे और नदियों व झीलो से मछली पकड़ते थे। यहां रहने वाले शिकारी कबीलो में से प्रमुख कबीलो के नाम थे - इरोकुआ, डिलावेर, ओटावा आदि। आज भी अमेरिका के कुछ बड़े शहरो के नाम इन्ही लोगों के नाम पर पड़े हैं। जैसे डिलावेर शहर और कनाडा देश की राजधानी - ओटावा नगर।

ग्रेट प्लेंस

यह लंबा-चौड़ा घास का प्रदेश है। यही बाईसन नाम के जंगली भैंसे चरते थे। यहां रहने वाले लोग बाइसनो का शिकार करके जीते थे। ये लोग बाइसन का मांस खाते थे, बाइसन की खाल ओढ़ते थे और बाइसन की खाल से बने तंबू में रहते थे। अमेरिका में रहने वाले इन कबीलो के नाम थे - अपाचे, नवाजो, होपी आदि। वे घास के मैदानो में जगह-जगह घूम कर शिकार करते थे। जहां भी कुछ दिनों तक ठहरते, वहां वे लोग थोड़ी बहुत सब्ज़ियां - जैसे लौकी, कद्दू, और फलियां - उगा लेते थे।

ग्रेट प्लेंस के इंडियन लोग। देखो, सामान कैसे ले जाया जा रहा है

मिसिसिपी मैदान के दक्षिणी भाग एवं अटलांटिक महासागर के तटीय प्रदेश

यहां चेरोकी, चौकटाव आदि कबीलों के लोग बसे थे। ये लोग मुख्यतः खेती करते थे और एक जगह बसकर रहते थे।

पश्चिम के सूखे प्रदेश

यहां रहनेवाले लोग कुछ खेती और कुछ पशु पालन करते थे। ये लोग एक विशेष तरह के घरों में रहते थे। पत्थर और मिट्टी के बहुमंज़िले घर इतने बड़े होते थे कि पूरा गांव एक ही घर में रहता था। इन घरों को "प्यूबलो" कहा जाता था और इसी से उनमें रहनेवालों का नाम भी पड़ा।

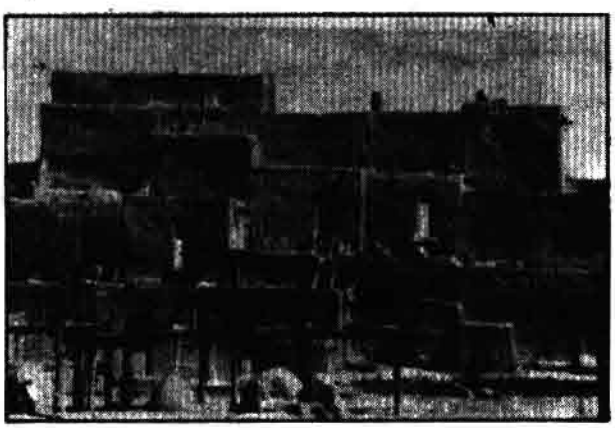

प्यूबलो घर

आदिवासियों की खेती

उस समय अमेरिका में गेहूं या धान की खेती तो नहीं होती थी। उस समय अमेरिका की प्रमुख फसल मक्का थी। मक्का बहुत आसानी से उगने वाली फसल है। ज़मीन को ज़्यादा जोतना नहीं पड़ता है, फसल की ज़्यादा देखभाल नहीं करनी पड़ती है और उपज भी भरपूर रहती है। मक्के के अलावा यहां के लोग कई सब्ज़ियां उगाते थे जो उन दिनों विश्व में और कहीं नहीं उगाई जाती थी, जैसे - आलू, टमाटर, हरी मिर्च, कद्दू और मूंगफली और फलों में अमरूद, अन्नानास व सीताफल। वे तंबाकू और काजू भी उगाते थे। ये फसलें, फल और सब्ज़ियां बाद में पूरी दुनिया में फैल गईं। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि उत्तरी अमेरिका में उन दिनों गाय-बैल, घोड़े या बकरी जैसे जानवर थे ही नहीं। इसलिए इन जानवरों को पालने या इनकी मदद से हल जोतने व गाड़ियां हांकने का प्रश्न ही नहीं उठता। लोग कुदाल से ज़मीन जोत कर फसल उगाते थे।

अमेरिका में सोना-चांदी काफी मात्रा में मिलता था। वहां की नदियों की रेत में से सोने के कणों को छान-छान कर अलग किया जाता था। अमेरिकन आदिवासी सोने के सुन्दर गहने बनाकर पहनते थे। लेकिन उन्हें लोहे के उपयोग का पता नहीं था।

ये अमेरिकन कबीले अमेरिका के लंबे-चौड़े महाद्वीप में दूर-दूर बिखरे हुए थे। कहीं एक जगह उनकी घनी आबादी नहीं थी। हर कबीले के पास शिकार ढूंढने और उसका पीछा करने के लिए पर्याप्त जंगल-ज़मीन थी। ये कबीले अपने भोजन की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही शिकार व खेती किया करते थे, व्यापार या मुनाफे के लिये नहीं। इसलिए वे पेड़ भी कम काटते थे और खेती भी सीमित मात्रा में ही करते थे। जंगल व खेतों पर पूरे कबीले का अधिकार होता था, किसी एक व्यक्ति या परिवार का नहीं। जो शिकार मिलता था, या अनाज उगता था उसे कबीले के सब लोग आपस में मिल बांटकर खाते थे।

कई सदियों तक आदिवासी अमेरिकन जंगलों, घास के मैदानों और अपनी ज़मीन की खुली आज़ादी में जीते रहे। दूसरे महाद्वीप के लोगों से भी उनका कोई खास संपर्क नहीं था। समय के साथ ऐसी घटनाएं होने लगी, जिन्होंने अमेरिकन आदिवासियों का जीवन

ही बदल दिया और अमेरिका की ज़मीन, जंगल, घास के मैदानो, पठारो और पहाड़ो की सूरत भी बदल दी।

उत्तरी अमेरिका के कुछ आदिवासी कबीलों के नाम बताओ।
अमेरिकन आदिवासियो के जीवन के अलग-अलग तरीकों का वर्णन करो।
अमेरिकन आदिवासियो से दुनिया के अन्य लोगो ने क्या सीखा?

अमेरिका और दूसरे महाद्वीपों के बीच संपर्क बना

यह कैसे हुआ कि हज़ारो साल से लोग अमेरिका मे रहते आ रहे थे और उनका संपर्क दूसरे महाद्वीप के लोगो के साथ नही बन पाया था?

नीचे दिये विश्व के मानचित्र में महासागरो के नाम लिखो और उन्हें रंगो। फिर महाद्वीपों को पहचानकर उन पर उनके नाम लिखो।
अब क्या तुम कोई कारण सोच सकते हो कि क्यों अमेरिका और दूसरे महाद्वीपों के बीच संपर्क नहीं बन पाया?

विश्व का मानचित्र

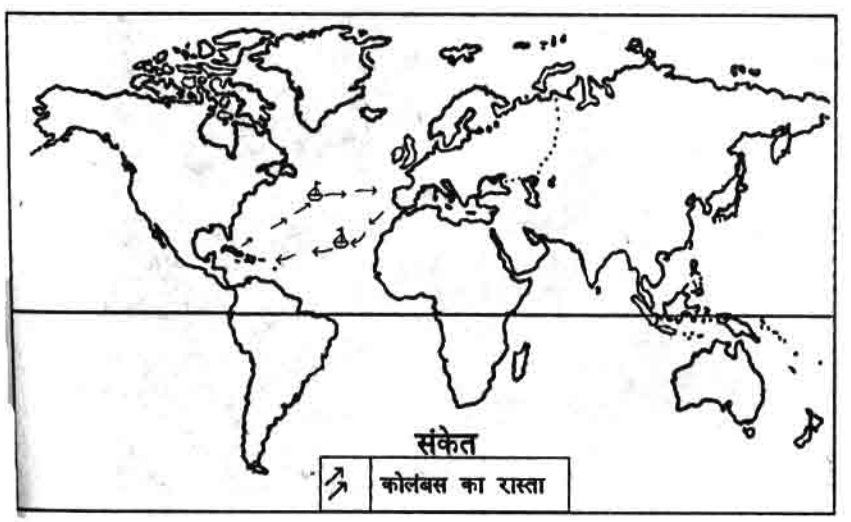

इन महाद्वीपो के बीच संपर्क आज से 400 वर्ष पूर्व ही बना और वह भी संयोग से।

सन् 1300 से 1500 के बीच का समय था। तब भारत और यूरोप के बीच मसालो और कपड़ो का व्यापार तेज़ी से बढ़ रहा था। यूरोप के व्यापारी और नाविक भारत पहुंचने के लिए आसान व सुरक्षित मार्ग खोजने लगे थे। इटली देश का ऐसा ही एक नाविक था कोलंबस।

कोलंबस सोचने लगा, "अगर पृथ्वी गोलाकार है तो यूरोप से भारत पहुंचने के लिए दो रास्ते होने चाहिए। यूरोप से पूर्व की तरफ चलने पर भारत मिलेगा और इसके विपरीत अगर यूरोप से पश्चिम की तरफ चलते जायें तब भी भारत पहुंच सकते हैं।"

तुम भी ग्लोब देखो और बताओ कि क्या कोलंबस का यह विचार सही था?

सन् 1492 मे कोलंबस तीन जहाज़ लेकर अटलांटिक महासागर को पार करने चला। उसका विचार था कि इस सागर को पार करने पर वह भारत पहुंच सकता है।

क्या उसका विचार ठीक था? अटलांटिक महासागर पार करके कोलंबस कहां पहुंचा? नक्शे में देखो।

कोलंबस तो यही सोचता रहा कि वह भारत पहुंच गया है। वास्तव मे वह एक ऐसे महाद्वीप पर जा पहुंचा था जिसके बारे में यूरोप के किसी भी व्यक्ति को पता नही था। अमेरिका के लोगो ने भी पहली बार यूरोप के लोगो को देखा।

जहां कोलंबस जाकर उतरा वह अमेरिका महाद्वीप के पास एक द्वीप समूह था। उस द्वीप समूह को हम आज वेस्ट इंडीज़ कहते हैं। वहां पर अरावाक कबीले के लोग रहते थे।

अरावाक लोगों ने कोलंबस और उसके साथियों का दोस्ती से स्वागत किया, उन्हें फल, सब्ज़ी और अन्य खाने की चीज़ें भेंट में दी। कोलंबस ने एक पत्र में उनके बारे में इस प्रकार लिखा, "जो भी कुछ उनके पास था बेहिचक इंडियन लोगों ने हमें देना चाहा।"

कोलंबस ने अरावाक लोगों को "इंडियन लोग" क्यों कहा होगा?

कोलंबस और उसके साथियों ने देखा कि अरावाक लोग सोने-चांदी के ज़ेवर पहने हैं। उन्होंने अरावाकों से सोने की खदानों का पता पूछा। उनके मन में यह लालच आ गया कि भारत न पहुंचे, न सही। पर यहां से सोना-चांदी यूरोप ले जा सकते हैं। उन्हें अरावाक लोग भी बहुत सीधे-साधे लगे जिनके पास यूरोपियनों जैसे हथियार व बन्दूकें नहीं थीं। अमेरिका का सोना व गुलाम यूरोप में बेचकर वे धनी व प्रतिष्ठित बन सकते थे।

कोलंबस के साथियों ने अरावाकों से सोने की बहुत मांग की। अगर अरावाक सोना नहीं ला पाते तो कोलंबस के साथी उन्हें बेरहमी से सताते व जान से मार डालते। कई अरावाक बन्दी बना कर यूरोप ले जाए गए और लंबे सफर की कठिनाइयों और यातनाओं से मरे। जब कोलंबस 1492 में अरावाकों के द्वीप पर पहुंचा, वहां 2 लाख से अधिक अरावाक लोग थे। 1500 तक आते-आते, यानी 17 वर्षों में उस द्वीप पर सिर्फ 6000 अरावाक जीवित बचे थे।

इस तरह अमेरिका के लोगों का संपर्क एक दूसरे महाद्वीप के लोगों के साथ शुरू हुआ।

यूरोप में खबर फैली

दूसरी तरफ यूरोप में यह खबर फैल गई कि अमेरिका में बहुत खाली ज़मीन है जो खेती बाड़ी के लिए उत्तम है, वहां सोने-चांदी की खदानें हैं, घने जंगल और चौड़ी नदियां हैं। इन खबरों से यूरोप के अमीर-ग़रीब सब तरह के लोग अमेरिका की ओर आकर्षित हुए।

इन्हीं तीन जहाज़ों के साथ कोलंबस अमेरिका पहुंचा

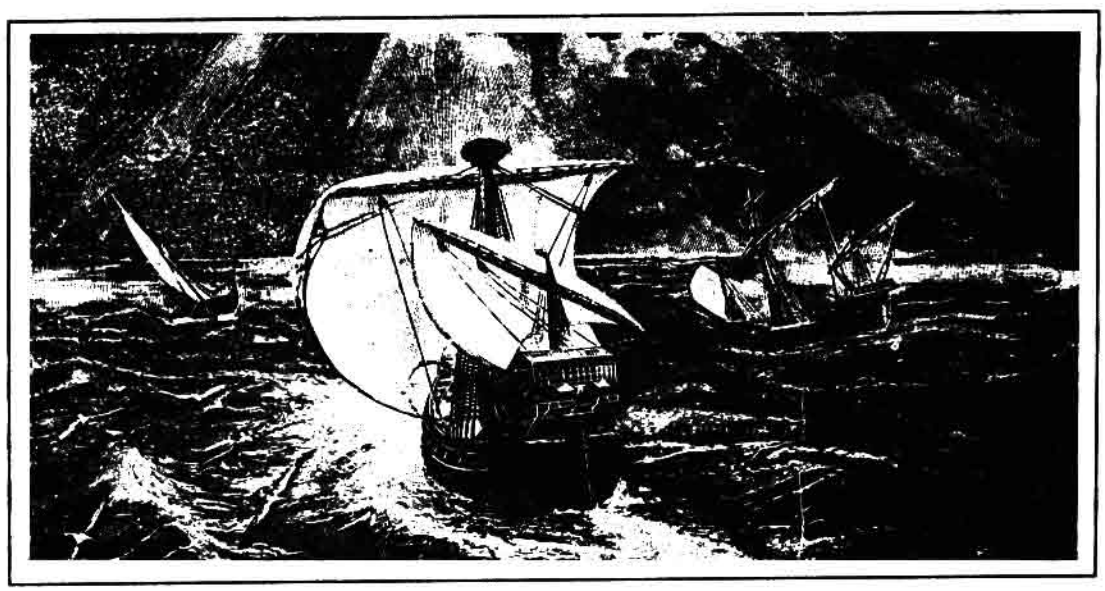

यूरोप की स्थिति

यूरोप में उन दिनों जनसंख्या तेज़ी से बढ़ रही थी। लोग अधिक थे और खेतिहर ज़मीन कम। इसका फायदा यूरोप के बड़े ज़मींदार उठा रहे थे। वे किसानों से अधिक लगान मांगने लगे थे। ऐसे हालात में, जब यूरोप के लोगों ने सुना कि उत्तरी अमेरिका में ज़मीन खाली है तो वे अमेरिका की ओर चल पड़े। कई ग़रीब किसान ज़मीन के लालच में आए। कई व्यापारी व्यापार और धंधे के नए मौके ढूंढने के लिए अमेरिका आए।

अमेरिका में यूरोप के लोग बसने आए

चलो, अमेरिका की ओर।

सबसे पहले फ्रांस के लोग उत्तरी अमेरिका में जाकर बसे, फिर ब्रिटेन के लोग (अंग्रेज़ लोग) वहां बसने लगे। जैसे-जैसे ये लोग अमेरिका में बसते गए, वैसे-वैसे अमेरिका की प्रसिद्धी यूरोप भर में फैलती गई। हर साल यूरोप के विभिन्न देशों से अमेरिका के लिए जाने वाले लोगों का तांता लगा रहता। 1750 तक 15 लाख अंग्रेज़, 20,000 फ्रेंच और अन्य यूरोपीय देशों के हज़ारों लोग अमेरिका में बस गए थे। इनमें से अधिकतर अंग्रेज़ ही थे।

कोलंबस क्या ढूंढते हुए अमेरिका पहुंचा? अमेरिका में यूरोपीय लोगों को अपने लाभ की क्या-क्या चीज़ें मिलीं?

अमेरिका में बसने का अनुभव : जेम्सटाउन की कहानी

अमेरिका में अंग्रेज़ों की पहली बस्ती जेम्सटाउन थी। आओ देखें कि यह कैसे बसाई गई। सन् 1610 की बात है। एक छोटा सा जहाज़ इंग्लैंड से चलकर अमेरिका के पूर्वी तट पर चीस्पीक नाम की खाड़ी में पहुंचा। उस जहाज़ में 120 लोग थे जो उत्तरी अमेरिका में बसने आए थे। जहाज़ से उतरकर ये लोग बसने के लिए उपयुक्त स्थान ढूंढने लगे। उन्होंने एक छोटी-सी नदी किनारे एक ऊंचा स्थान चुना और वहां अपनी बस्ती बसाई। इंगलैंड के राजा जेम्स के नाम पर उस नदी को उन्होंने "जेम्स नदी" कहा और नई बस्ती को "जेम्सटाउन" नाम दिया।

जेम्सटाउन बस्ती के शुरुआत के दिन

जेम्सटाउन में बसे लोगों में किसान, बढ़ई, लोहार, दर्ज़ी, नाई और ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले पादरी थे। सोचो वे लोग जहां बसे, वहां न मकान थे, न सड़कें, न गाड़ियां, न खेत। वे लोग पहले तंबू गाड़ कर रहने लगे। फिर उन्होंने चारों तरफ के जंगलों से पेड़ काट कर लकड़ी के मकान बनाए। जंगली जानवरों का खतरा भी बना रहता था। इसके लिए ज़रूरी था कि जल्दी ही आसपास का जंगल काटकर साफ कर दिया जाए। वे ऐसा ही करने लगे।

रहने का इंतज़ाम करने के साथ-साथ इन लोगों को अपने भोजन का इंतज़ाम भी करना था। वे इंग्लैंड से अपने साथ दो महीने का भोजन लेकर आए थे। उन्हें यह चिंता थी कि जल्दी ज़मीन साफ कर खेती

शुरू करे - वरना दो महीने बाद वे क्या खाकर जीते?

खेती के लिए जंगल साफ करना आसान न था। उनके पास औज़ार के रूप में सिर्फ कुल्हाड़ियां थी। कुल्हाड़ियों की मदद से जंगल काटने में बहुत समय लग जाता था। एक साल में वे 40 एकड़ ज़मीन ही खेती लायक बना पाए। इस ज़मीन पर उन्होंने इंडियन लोगों को देखकर मक्का व सब्ज़ियां बोईं।

इन हालातों में भोजन की कमी लगातार बनी रहती थी। आसपास जो आदिवासी कबीले रहते थे उन्होंने जेम्सटाउन के लोगों की मदद की। वे उन्हें समय-समय पर मक्का, फल, सब्ज़ियां खाने को देते। इस मदद के बदले में अंग्रेज़ अमेरिकन आदिवासियों (इंडियनों) को छोटे-मोटे उपहार देते थे - जैसे कपड़े, मनके, लोहे के चाकू आदि।

जेम्सटाउन के लोगों ने अपने भोजन का इंतज़ाम तो करना शुरू कर दिया था पर ज़रूरत की अन्य सभी चीज़ें उन्हें ब्रिटेन से मंगानी पड़ती थी। अमेरिका में तो कारखाने नहीं थे और जिस तरह के कपड़ों, दवाईयों, औज़ारों, हथियारों, बर्तनों आदि की ज़रूरत जेम्सटाउन के लोगों को थी वे अमेरिका में बनती नहीं थी। ब्रिटेन से चीज़ें मंगवाने के बदले में जेम्सटाउन के लोग ब्रिटेन को लकड़ी व जड़ी-बूटियां ही बेच पाते थे। मंगाई हुई चीज़ों का मूल्य इससे पूरा चुकता नहीं था।

तभी उन लोगों ने आसपास के प्रदेशों में इंडियनों की देखा-देखी तम्बाकू उगानी शुरू की। ब्रिटेन में तम्बाकू लोकप्रिय हो गई थी। अमेरिका से ब्रिटेन तक जाने में तम्बाकू सड़ के खराब भी नहीं होती थी।

तम्बाकू के अलावा कपास की खेती भी शुरू की गई। ये दोनों फसलें अमेरिका के इन भागों में अच्छी तरह पैदा होती थीं। ये फसलें ब्रिटेन से व्यापार करने में बहुत लाभकारी थीं।

जेम्सटाउन में बसे अंग्रेज़ लोगों ने अधिक से अधिक ज़मीन पर तम्बाकू व कपास उगाने की कोशिश की। इसमें दो दिक्कतें उनके सामने थीं। एक यह कि ज़मीन पर काम करने के लिए मज़दूरों की कमी थी। वे तो

अंग्रेज़ों का सरदार कैप्टन स्मिथ को अरावाक लोगों ने तरह-तरह के खाने का सामान दिया

थोड़े से ही लोग थे और अमेरिका में ज़मीन बहुत थी। पर मज़दूरो की कमी का हल जल्दी ही निकल आया।

अमेरिका मे बसने के लिए यूरोपीय लोगो को शुरू मे क्या-क्या काम करने पड़े थे - चार बाते पाठ मे ही रेखांकित करो।

अमेरिका में अफ्रीका से दासों का लाना

सन् 1619 मे हॉलैंड देश का एक जहाज़ कुछ अफ्रीकी दासो को लेकर जेम्सटाउन आया। जहाज़ के अधिकांश दास मर चुके थे। केवल 20 बचे हुए थे। अमेरिका मे बसे यूरोपीय लोगो ने उन्हें खरीद कर अपना दास बना लिया। उन्हें जबरन खेतों में काम करने को कहा गया। दासो के मालिक देखते-देखते धनी हो गए। फिर तो अफ्रीकी दासो की मांग बढ़ती ही गई।

स्पेन, फ्रांस, हॉलैंड आदि यूरोप के देशो की कंपनियां दासो का व्यापार करने लगी। ये कंपनियां यूरोप से तरह-तरह का सामान अफ्रीका ले जातीं और उसके बदले मे दासो को खरीद लातीं। दासो को बंदी बना कर अमेरिका लातीं। रास्ते मे कितने ही लोग बीमार पड़ते व मर जाते। उनके भोजन-कपड़े का भी ठीक से प्रबंध नही होता।

अमेरिका लाकर बाज़ारो मे दासो की नीलामी होती। जो यूरोपीय लोग खेतिहर भूमि लेते, वे दासो को भी खरीदते। उनको फार्म पर रख कर खेती का काम करवाते। अफ्रीकी दास औरते फार्म मे घरो का काम भी करती। काम के बदले उन्हें मज़दूरी नही मिलती थी। केवल खाना और कपड़ा दिया जाता था।

दासो की मारपीट, यातना देना और यदि भागे तो मार देना आम बाते थी। दासो के जो बच्चे होते वे भी उसी मालिक के दास होते, या मालिक को

शुरू मे अफ्रीका से लाए गए दास

आवश्यकता न होने पर, उन्हें बाज़ार मे बेच दिया जाता।

अमेरिका में अफ्रीकी दासों की ज़रूरत किसे थी और क्यों - चर्चा करो।

यूरोपियनों द्वारा अमेरिकन आदिवासियों की ज़मीन पर कब्जा

अफ्रीकी दासो से मज़दूरो की कमी दूर हुई। पर, अमेरिका की ज़मीन पर बड़ी मात्रा मे व्यापार के लिए तम्बाकू व कपास उगाने में यूरोपीय लोगो को एक दूसरी दिक्कत का सामना भी करना पड़ा। यह ज़मीन अमेरिका के आदिवासियो की थी। इस पर वे शिकार करते थे और खेती करते थे।

जेम्सटाउन के लोगो की तरह अमेरिका मे बस रहे अन्य यूरोपीय लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा ज़मीन पर तम्बाकू और कपास उगाकर यूरोप मे बेचकर मुनाफा कमाना चाहते थे। यानी वे केवल अपने भोजन की ज़रूरतो के लिए खेती नही कर रहे थे।

तुम्हें याद होगा कि इंडियन लोग जो खेती करते थे या शिकार करते थे वह केवल अपने परिवार की

सीमित ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कर रहे थे। इस कारण इंडियन लोग थोड़ा सा जंगल काटकर वहां खेती करते थे। इसके विपरीत अब यूरोपीय लोग तेज़ी से जंगल काट-काटकर खेती करने लगे। साथ ही खाल बेचने के लिए भारी मात्रा में जंगली जानवरों का शिकार भी करने लगे।

इन सब बातों के कारण इंडियन लोग यूरोपीय लोगों से परेशान होने लगे। उनके मन में यह डर बनने लगा कि अगर यूरोपीय लोग यहां बस जाएंगे तो वे सारा जंगल खत्म कर देंगे, सारा शिकार खत्म कर देंगे और हमें भी यहां से खदेड़ देंगे।

उधर यूरोपीय लोग सोचते थे, "यह जंगल तो खाली पड़ा है। हम मेहनत करके इसे साफ करके यहां खेती कर रहे हैं। ये इंडियन लोग कौन होते हैं हमें रोकने वाले?"

इस तरह इंडियन लोग और यूरोपीय लोगों के बीच तनाव बढ़ता गया। सन् 1622 में इंडियन लोगों ने जेम्सटाउन पर आक्रमण करके सैकड़ों अंग्रेज़ों को मार डाला। इसके बदले में अंग्रेज़ों ने बार-बार इंडियनों पर हमला करके उनके भी सैकड़ों लोगों को मार डाला, उनके घर व फसलें जला डालीं।

इस तरह की झड़पों के साथ यूरोपीय लोग अमेरिकन आदिवासियों के इलाकों में घुसपैठ करते गए और कई भयंकर लड़ाइयों में आदिवासी कबीलों को हराते गए। लड़ाई में हारे कबीलों के साथ यूरोपीय लोग समझौता भी करते। समझौते के द्वारा कबीले अपने इलाकों की हज़ारों एकड़ ज़मीन यूरोपियनों के सुपुर्द करने पर मजबूर हो जाते। जो ज़मीन कबीलों के पास रह जाती, उसमें भी उन्हें यूरोपियनों को सड़कें, किले, बन्दरगाह आदि बनाने का हक़ देना पड़ता।

इस तरह यूरोपियनों ने पूरे अटलांटिक तट के मैदान से आदिवासी कबीलों को हटा दिया और उनकी ज़मीन पर अपनी बस्तियां बना लीं।

शुरू में जब यूरोपीय लोग अमेरिका में बस रहे थे तो आदिवासी अमेरिकनों ने उनकी किस तरह मदद की थी?
बाद में आदिवासी अमेरिकन यूरोपियनों से क्यों लड़ने लगे?

अमेरीका के पश्चिमी भागों पर यूरोपियनों का कब्जा

धीरे-धीरे अमेरिका के पूर्वी तट पर यूरोपियनों की घनी बस्तियां हो गई थीं। यूरोप से जो नए लोग लगातार अमेरिका बसने आ रहे थे - वे अपने लिए

यूरोपियनों का बढ़ता हुआ कारवां

इस तरह लाखों बाइसन मारे गये

नई और खुली जगहें तलाश करने लगे। ज़मीन की तलाश मे लोगो ने अपलेशियन पर्वत श्रेणी पार की और मिसिसिपी नदी के मैदान में बसना शुरू कर दिया। वहां के जंगल काटने लगे और खेत बनाने लगे। मिसिसिपी नदी के मैदान मे बसे आदिवासियो को फिर लड़ाइयो और समझौतो के ज़रिए हटाया गया।

इस बीच कई यूरोपीय व्यापारी आदिवासियो के साथ व्यापार करने लगे थे। वे बाइसन की खालें, रोएंदार पशुओ (लोमड़ी, भालू) की फरदार खाले, सोना, चांदी जैसी चीज़े आदिवासियो से बड़ी मात्रा मे मंगवाने लगे। इन चीज़ो को वे यूरोप मे अच्छे दामो पर बेच कर मुनाफा कमाते। इन चीज़ों के बदले में वे आदिवासियो को कपड़े, लोहे की चीज़े, शराब, बन्दूकें, घोड़े आदि दिया करते थे।

इस व्यापार के पीछे कई यूरोपीय व्यापारी आदिवासियो से दूर-दूर तक जाकर संपर्क करते थे। इस सिलसिले मे वे अमेरिका के पश्चिमी इलाको के घास के मैदानो मे पहुंचे, रॉकीज़ पर्वत श्रेणी पार की, और वे प्रशांत महासागर के तट तक भी पहुंचे। इन व्यापारियो के ज़रिए अमेरिका के पश्चिमी भागो की मिट्टी, ज़मीन, पानी, जंगल व खदानों की खबरें पूर्वी अमेरिका मे बस रहे यूरोपीय लोगो तक पहुंचने लगी। 1849 में पश्चिमी अमेरिका मे कैलीफोर्निया नामक जगह पर सोना मिलने की खबर आग की तरह फैली। हज़ारों यूरोपीय लोग ताबड़-तोड़ कर पश्चिमी प्रदेशो की तरफ सोने की तलाश मे भागे। पर पश्चिम में सोना नही मिला। निराश लोग अब वही बस गए और खेती करने लगे। कई लोग अमेरिका के बीच के सूखे घास के मैदान मे ही रुक कर बस गए।

अब इन इलाको मे रहने वाले आदिवासी लोगो को खतरा महसूस हुआ। यूरोपियनो ने उन्हें यहां भी अकेला नही छोड़ा था। अब तो उन्होंने अटलांटिक तट से पश्चिम की ओर काफी लंबी रेल लाईन व सड़क भी बना ली थी। लोगो का आना-जाना और आसान हो रहा था। बड़ी तादाद मे यूरोपीय लोग अमेरिका के बीच के व पश्चिम के भागो में आने लगे थे।

घास के विशाल मैदान में चरने वाले बाइसन, जो आदिवासियो के जीवन का मुख्य आधार थे, अब यूरोपियनो द्वारा धड़ाधड़ शिकार किए जाने लगे। यूरोप में बाइसन की खाल की मांग तो थी ही। बाइसन की जीभ भी खाने के लिए स्वादिष्ट पाई गई। इसलिए अब व्यापार के लालच में यूरोपीय लोग हज़ारो की संख्या मे बाइसनो को बन्दूको से मारने लगे। बीच के विशाल मैदान मे बाइसनों की लाशो व कंकालो का ढेर फैला रहता।

यह सब आदिवासी अमेरिकनो से नही देखा गया। उनके जीवन का पूरा तरीका उनकी आंखो के सामने

नये बसने आ रहे यूरापियनो और आदिवासी अमेरिकनो के बीच लड़ाई

खत्म हो रहा था। उन्होंने जम कर यूरोपियनों से लड़ाई की। कई खूनी लड़ाइयां हुईं पर अंततः आदिवासी अमेरिकनों को हार माननी पड़ी।

शुरू में अमेरिका आए यूरोपीय लोग अमेरिका के पूर्वी तट पर बसे थे। उन्हें धीरे-धीरे पश्चिमी तट तक संपूर्ण अमेरिका की जानकारी कैसे मिली?
यूरोपीय लोग पूर्वी तट के अलावा अमेरिका के पश्चिमी तट तक क्यों बसते गए?

इंडियन रिज़र्वेशन बना

संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने आदिवासी अमेरिकनों के साथ एक अन्तिम समझौता किया। करीब 130 करोड़ एकड़ ज़मीन का इलाका आदिवासी अमेरिकनों के लिए अलग रख दिया गया। इसे अमरीकी सरकार ने "इंडियन रिज़र्वेशन" कहा। इसी इलाके मे आदिवासी अमेरिकन रह सकते थे। इसमे कोई यूरोपीय व्यक्ति घुसपैठ नहीं कर सकता था। तब से अब तक अमेरिका के आदिवासी रिज़र्वेशन मे रहते आए हैं।

इस तरह अमेरिका के मूल निवासी अमेरीका के विकास पर अपना वश खो बैठे। वे जिस तरह अमेरिका के जंगल-ज़मीन का उपयोग करते थे, वो तरीका नष्ट हो गया।

यूरोपियनों ने अपने तरीके से अमेरिका के ज़मीन-जंगल का उपयोग किया और अमेरिका के भूगोल को नई सूरत दी।

दास प्रथा खत्म हुई

जहां तक अफ्रीकी दासो की बात है वे अपनी दासता का कई तरीको से विरोध करते रहे और सन् 1861 में अमरीकी सरकार ने कानून बना कर दास प्रथा खत्म कर दी। इस कानून का ज़मीदारो ने विरोध किया और इस बात पर अमरीकी सरकार को ज़मीदारो के साथ 4 साल तक युद्ध लड़ना पड़ा। पर आखिरकार अफ्रीकी

दास मुक्त हुए और अमरीका के नागरिक माने जाने लगे। लेकिन उन्हें वास्तविकता मे बराबरी का दर्ज़ा नही मिला और इसके लिए वे आज भी संघर्ष कर रहे हैं।

उत्तरी अमेरिका के देश

उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के दो बड़े देश है कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका। संयुक्त राज्य अमेरिका मे अलास्का और हवाई द्वीप समूह भी आ जाते हैं, जो मुख्य भूमि से अलग हैं।

अमेरिका मे बसे अंग्रेज़ो ने इंग्लैंड की सरकार से अपने नाते तोड़ लिए थे और सन् 1776 मे संयुक्त राज्य अमेरिका नाम का नया देश बनाया था। अमेरिका महाद्वीप के उत्तरी हिस्सो मे जो अंग्रेज़ बसे थे उन्होंने इंग्लैड की सरकार से अपना रिश्ता बनाए रखा। यह अलग देश बना - कनाडा।

अब तुम संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण में पड़ने वाले इन देशो को पृष्ठ 226 के मानचित्र मे देखो - मेक्सिको, गुआटेमाला, एल साल्वेडोर, निकारागुआ, कोस्टारिका, पनामा और पश्चिमी द्वीप समूह व क्यूबा। ये मध्य अमेरिका के देश कहलाते हैं।

तुम इन देशों को मानचित्र मे अलग-अलग रंगों से रंगो।

कनाडा के उत्तर मे ग्रीनलैंड नाम का बड़ा द्वीप है। यह भी उत्तरी अमेरिका महाद्वीप मे आता है पर यूरोप के डेनमार्क देश का हिस्सा है। ग्रीनलैंड का अधिकतर हिस्सा बर्फ की मोटी तह से ढका रहता है।

इस वर्ष हम उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के एक देश संयुक्त राज्य अमेरिका के बारे में विस्तार से पढ़ेगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरो :
   क. अमेरिका के टुंड्रा प्रदेश मे ..... नाम के कबीले रहते थे।
   ख. अमेरिका के सूखे प्रदेशो मे रहने वाले लोग ..... घर बनाते थे।
2. अमेरिका के आदिवासी लोग सीमित मात्रा मे ही क्यो खेती करते थे?
3. अरावाक लोगो ने कोलंबस के साथ कैसा व्यवहार किया? कोलंबस ने उनसे कैसा व्यवहार किया?
4. यूरोप के किसान किस कारण परेशान थे जिसकी वजह से वे अमेरिका मे बसने के लिए चले?
5. जेम्सटाउन मे मज़दूरो की कमी पूरी कैसे हुई?
6. जेम्सटाउन मे तम्बाकू और कपास क्यो उगाया जाने लगा?
7. यूरोप के लोग आदिवासी अमेरिकनो को क्यो खदेड़ते गए?
8. आदिवासी इंडियन भी बाइसनो का शिकार करते थे और यूरोपीय लोग भी उनका शिकार करने लगे। मगर क्या दोनो के उद्देश्यो और तरीको मे कोई अंतर था?
9. इंडियन रिज़र्वेशन क्या है?

उत्तरी अमेरिका के देश